

पत्र
॥२॥

५२॥

नमो नमः ॥ नमस्ते इह रूपि एषे शां कथ्येति नमो नमः
 सर्वदेव स्व रूपि एषे नमो नमो जे जसु र्नेये ॥१३॥ सर्वस्य
 सर्वव्याधीनो निष्क श्रेष्ठे नमो नमः ॥ स्यात्तु जग
 मसंस्तुत विषु सं त्रै नमो नमः ॥१४॥ संसार विषनाशि
 न्यै जीवनाये नमो स्तुते ॥ ताप हत य सं त्रै प्रा रोक्ष
 यै नमो नमः ॥१५॥ शांति संतान कारि एषे नमस्ते शु
 ब्ध सु र्नेये ॥ सर्व सिद्धि प्रदा यि एषे नमः पापादि म
 र्नेये ॥१६॥ भुक्ति मुक्ति प्रदा यि एषे भोग व त्पै नमो
 स्तुते ॥ महा कि न्यै नमस्ते सु स्वर्ग दा यि नमो नमः
 नमस्ते लोक्य ह सि एषे त्रि पथा ये नमो स्तुते ॥
 नमस्ति भुक्ति संस्था ये हे मा व त्पै नमो नमः ॥ त्रि
 रुद्र हा ये नमो नमः ॥ भोगोप भोग दा यि ४

गृह्यती दृशो जं गु गु ले धूपं सु गंधं च मनो ह सं १ ॥
 गृहाण मंगलं ही वं घृतवति समन्वितं रुद्ररूपेण
 मस्तै स्व गृहाण वरदाभव ॥ १ ॥ परदार परद्रव्यप
 रद्री कं पशु मूरवः ॥ जंगा बुते क हा जत्य मा मयं मा यि
 व्यंति ॥ इति वैश्वेनर नारद संवा हे दृश पाप प्रा
 याः श्री गंगाः ध्यानार्चन विधि ॥ २ ॥ संवे ध्याना र्चन
 पश्चात्तु लो ले रे स्थित्वा ॥ जेषे मा से सि ते प शे प्र
 ति पशु र अ दृश मी प र्यं तं दृश विधि पाप प्रा
 शान उ न रो न र दिन द्दि न व द्वा दृश प्रा स्तो त्रं
 पाठ म सं करि व्ये ॥ श्री मो वा च ॥ नम शि वा ये गंगा ये
 शिव श ये न मो नमः ॥ नम स्त विष्णु रूपि रा ये ब्र ह्म ऋ न्यै

Handwritten text in Devanagari script, mostly illegible due to fading and bleed-through from the reverse side of the page.

Handwritten text in Devanagari script, mostly illegible due to fading and bleed-through from the reverse side of the page.

वर्तुञ्जो

त्रि एत्रो वसवी व्र एव शो न्नि तां ॥ रं लकुं मसितां
मो जवर हा मय सत्करं ॥१॥ स्वेत बस्य परिधानो
मुक्ता मणि विभूषितां ॥ वाम रै र्द्यु जिमाना श्व स्वत
पत्र छत्रे प्य शो न्नि तां ॥२॥ सु प्रसन्नो च वर हां क्रतु एण्ड

पत्र

॥१॥ निरं नरं ॥ सु धाया वित न्त ए षां दिव्य गंधानु लेपनां ॥३॥
वि लो क्य नि भ्रि तां जं गी सर्व हृ द्यै र धिष्ठितां ॥ दिव्य त्त
वि न्त यां च दिव्य मानु धारि णी ॥४॥ ध्या त्वा ज ले य
धा बो र्कं स था र्द्या यां प्र स ज ये त् ॥ पुं न्मो न ग व सै रं
फि लि फि लि मि लि मि लि जिं जे मां पा व य पा व य स्वा ता ॥५॥
अ ने न मंत्रे णा ज मो क्ते न श्री गं गी ये पं च पु ष्यां ज लि
नि वे ह ये त् ॥६॥ म या हु ता नि पु ष्या णि ह जा र्थे व ति

गणपतिपरिवारं चोक्तं मूरुहारां गिरिवरनरस्यारं
 योगनिबन्धजोसो॥ जनजलपरिपारं दुःखदृष्टि
 उकारं गणपतिमभिवंदेव क्रतुं तावतां ॥ ३॥ सुमु
 खश्चैकं हंतश्च कपिलो गजकण्ठकलंबो हर
 विकरो विधुराजो गणेशधिपधुमरकेतुगणेश
 धपशोभातचंद्रो गजाननः ॥ वक्रतुंडशूर्पकरो
 वरुं वै स्फुटपूर्वजः ॥ ५॥ षोडशैतानि नामानि यः
 पठेत्पुण्यदृष्टिः ॥ अविद्यारंजे विवाहे च प्रवेष्टे नि
 र्गमे तथा ॥ ३॥ संग्रमसेकटचैव विघ्नस्तस्य मजा
 यते ॥ इत्येते श्लोकं पठित्वा ॥ भुवि प्रार्थयेत् ॥

॥२॥

ब

रुर्विष्णु गुरुदेवामहेस्वरः ॥ गुरुदेव परब्रह्म तस्मै
 श्री गुरुवे नमः ॥ शिवं गुरुध्यात्वा तैस्तैस्त्या अमुक
 स्नामिने प्रयौमि ॥ इति नत्वा गुरुनामपूर्वकं यथाश
 क्तिं भूलमंत्रं जपित्वा ॥ इष्टदेवता स्मरणं च कुर्यात् ॥
 जेत्येयः शिवपुराणं शिवरिशा व्याजा इति बभूवोस्त
 संवत्सरे भवो भवेन भवनं शिवे यथा धर्तुं धरौ ॥ पार्वत्या
 मपि यासुरप्रमथने सद्यश्चिद्विजयं कथये ध्यातः पं
 चशतैश्च विष्णुजितये पायात्सुतागाननः ॥ ११ ॥
 अविदमद् जलनेव फंभ्रमं कुलातीकमेवितक
 पौलं ॥ अजिमलकुलाहात्तारं कामेशं गणपतिं वं
 इ ॥ २ ॥

11311

समुद्धिनिहिते ॥ मलेन त्रिरात्रा मले ॥
 संतर्ष्य ॥ ततो वासिष्ठिः ॥ स्वस्ति यस्मिं गशो वरु ॥
 सत्त्वा मलेन प्रोहिते ॥ तत्रै परिधा य ॥ अत्र मय नस्म ॥
 धारणं कुर्यात् ॥ त्रिरात्रात्र वै हि कसंध्यां कृत्वा तां ॥
 त्रिकीसंध्यां माचरेत् ॥ तद्यै ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॥ गं ॥ श्रीं ॥
 आत्म तत्त्वं शोधयानि स्नात्वा ॥ गयापलये वरवरह ॥
 विश्या तत्त्वं शो ॥ सर्वजनं मे वशमानय स्नात्वा शि ॥
 वतत्त्वं शो ॥ श्रीं नमः सुरवे ॥ श्रीं दृष्टनेत्रे ॥ श्रीं नमः ॥
 वासुदेवे ॥ श्रीं नमः दृष्टकर्णे ॥ गं नमः वातकर्णे ॥
 गयापलये काशो प्रवरवरह दृष्ट नासु मले ॥ सर्व

मुद्रमे ख जे इ विपर्व तस्तन प्रंठ ले ॥ निष्पत्ति न
 नस्तु न्यं पारु शरी क्षम स्वमे ॥ १० ॥ पश्चात् २ शो वाहि
 कं विधाय ॥ न द्या हो गत्वा वैहिक स्नानं कृत्वा तां वि
 कं स्नानीमा चरेत् स्वमंत्रस्य रु ध्या दिव्या स पूर्व क इ
 ए देव तो ध्यात्वा अमु क मुद्र या स्त र्थ मंड ला नी र्था
 ज्या वा ह्म वं इति धेनु मुद्र या अ मृ ता कृ त्वा हुं इति
 सं र ह्य त अ से देव ता मूर् ति ध्यात्वा त च्छ र य स्त त
 ती र्थे ति निर्मि म ज् ॥ अ त र्ज ले त्रि वा र म् ल ले म अ र्ध म
 र्थ यां कृ त्वा जा मि रू ध्ने जे ले अं ज ली ना लो यं ग
 णी त्वा त्रि वा रं मू ले न अ जि मं अ त्रि वा र म् ल ले न

जनमेवागमना रुक्म ले ॥ मेव शमान यस्मात्ता शि य
 सि ॥ मू ले मू लेन प्रा या मं वि धय । मू लेन मू ले कं
 प्रो ह्म ॥ १ ॥ मू ले न आ च मने कृ त्वा पुन मू लेन मू ले कं त्रिः
 प्र ह्म ॥ मू र्ग या र्थे इ त्वा ॥ मू ले नु च्छा र्थे । मू वि त्रे न
 मः इ ह्म र्थे समर्प या मि इ त्प र्थे त्र यं इ त्वा पु रो न म
 नं कृ त्वा प्रा ना ना य म् यथा श क्त्वा ग य त्री ज वे त्प
 त्तु र्ग या य वि भक्ते व क्र तुं जा य धी म् कृ ॥ त न्तो इ तिः
 प्र चो इ या त्त् रा तां ग य त्री ज त्वा स र्थे मं उ ल स्ये म् कृ
 ग रा प ति ध्वा त्वा मू ले न त्र प्रा या ना य म् मू र्ग या र्थे
 इं ग ध्वा न म् न मू ले न मू ले न आ च वि श ति वा रे य
 ज तं अ ति मं अ धे नु म् इ या अ म ती कृ त्प ले न ज ले

पत्र
॥४॥

था गंगा चतु रूपं न जिद्यते ॥ विष्णु रूपं तं यश्च
 श्री गौरी रं तं तथा गंगा गौरी रं यश्च यो भू
 ते मूठ धी सु सः ॥ रौरवादि यु यो रे यु रं नरक यु प तं
 प धः अह ज्ञान मु पा द नं हि सा चैव वि धान तः पर
 हा रो प सेवा च का यि कं त्रि वि धं स्म तं ॥ परु व्य म
 नू तं चैव पै शू नै वा पि सर्व शः ॥ अ स व दः ॥ अ ला प
 श्च वा ऽप्य ये स्था च्च तु वि धं पर द्र व्ये च्च जि ध्या नं म सा
 नि ष्चि त नं ॥ विल यानि ति वे श अ मान सं त्रि वि
 धं स्म तं ॥ ए ला नि द श पा पा नि त र तं म म जा नू वि
 द श पा प त रा य स्मा त स्मा द श त रा स्म ता ॥ ए ले द
 श वि धैः पा पे को रि जे न्म स मु न वै ॥ अ च्च तै ना सै
 अ सं दे त्तो प्र ल यो व च नं म था ॥ द श त्रि श च्च ता

सर्वाङ्गकामान्तरवाङ्मोतिप्रेतप्रभ्राणिवीयते
 इमंस्तवं गृह्यस्तु लेखयित्वा विनिश्चिते त्प
 नाग्निबौरं ह्येतत्र पापेभ्योपि नयं नहि ॥
 जंशेमाग्निमितेपहेततीयाहस्तयं युता ॥
 संहरेत्रिविधंपापंबुधवारसंयुता ॥ त
 स्यां दृश्यामेतच्च स्तोत्रं गंगाजलेस्थिता यः
 पठत्तदृशकतस्तु इन्द्रोवापि वाहमः ॥ सोपि
 तत्पुत्रमाङ्गोतिगंगासंपूजयन्नतः ॥ सर्वोत्तम
 विधानेन यत्पुत्रं संप्रकीर्तितं ॥ यथा गौरीत
 था गंगा तस्माद्गौरीप्रपूजयेत् ॥ यथाशिवस्त
 था विष्णुर्थाविष्णुस्तथां उमा ॥ उता यथा त
 विधियो विहितः सम्यक्

सोपि गंगा प्रपूजयेत्

७

यद्यि नमो स्तुते ॥ निर्दे पाये दुर्गं हं चै इहा येते
 नमो नमः ॥ परापरपरं तु न्यं नमस्ते मो हं इ स
 हां गं गे ममा यतो न्मथा रु गे मे दे वि र हं तः गं गे
 मे पा श्च यो र धि व यै गं गे तु मे स्थि तिः ॥ पा ह्यै
 त्वं मं ते मध्यं सर्वं त्वं गं गतः त्वा त्वं त्वमेव न्त ए
 प्ररु ति स्त्वं ति ना रा य णः परा ॥ गं गे त्वं पर मा त्मा
 वं नमः स्तु न्यं नमः शि व ॥ यद्यि हं प ग ति स्तो त्रं न
 म्पा नि त्पं न रो पि यः ॥ अ रो ति श्र ध या तु नः क
 य वा क् चि न सं न वेः ॥ इ रा धा सं स्थ लै हं यै प्र वै
 रे व प्र मु च्य ते ॥ रो ग स्थो मु च्य ते रो गा ह प श्च
 प्र मु च्य ते ॥ वि श न्धे वि ध ना द्यै न वे त्वा न्य श्च

॥३॥

॥३॥

श्र १२ मु च्य ते ॥

दु ता स न सं ष्ठा यै ते जो व त्पे न मो नमः नं हा यैः सर्व
 धारि ष्ठै ना र हा यै न मो नमः न मं स्ते वि श्व मु र्वा
 यै रे व न्पै ते न मो नमः व द्द त्पै ते न म स्ते स्तु लो क
 धा त्रै न मो नमः ॥ न म स्ते वि श्व मि त्रा यै नं दि न्यै ते
 न मो नमः ॥ पा रा जा त्त नि वृ त्ति न्यै श्रु ति ना यै न
 मो नमः ॥ शां ता यै च व रि षा यै व र षा यै न मो नमः ॥
 सु ख हा यै नो दु ख घ्नै च सं जी वि न्यै न मो नमः ॥
 ब्र ह्मि षा यै कृ ष्ण हा यै दु र्ति न्यै न मो नमः ॥
 प्र णा ता त्रि प्र मं जि न्यै ज ग न्मा स वी प त्त्र ति प
 हा यै मं ग ला यै न मो स्तु ते शार णा ग त दि ना र्त्त
 परि त्रा ण प रा य णे सर्व स्या त्ति क रे दे वि ना रा

न्म स कीन् विप्रिन य पिता मता न् उद्ध र त्येव स सा शम्भ
 १) श्रे ण नेन र जये त् ॥ ३ नमो भ गव तै ई शणा प न
 रा ये श्री गं गये ना रा य णै शि वा ये लोक ध्या त्रै ह मा
 व तै श्च म ता ये वि ष्णु मु ख्या ये दे व तै नं दि न्यै ता रा ये
 ब्र ह्म तै ते नमो नमः ॥ जे षे मा से शि ते प हे द श म्भ
 बु ध त स्त यो ग रा नं दे य ति पा ले क ल्या चं दे व तै
 र वौ द श म्भो नै जै रः स्मा त्वा श्र व पा पे प्र मु च्ये त्
 शि त म क र नि यि न्ना श्र व श्रा त्रि णै त्रै क र ध
 त क र शो य सो त्प जा मी त्वं भी षं ॥ वि धि न
 रि न्द्र रू पां सं द् कौ टि र न ज टं क शि पि त शि त
 उ क्ते लां जा न् वि त्वां न मा मि ५१ ॥ आ ह्वा र
 पि ती न्द्र श्च नि य म्ना पा र पा त्रे ज तं प श्चा त्य

न्न शशाग्रि नो भगव तः पा हो र्कं पा त नं
 भय भ्यां भुं ज रा वि भुं य रा म गि जी श्री भू ह
 खे रि यं क न्पा क ल्म स ना शि नि न ग व ती भा
 जी र थी पा तु नः इ ति श्री स्तं र्पु रा शे का शि खं
 उ ह श फ र स्तो त्रं सं प्र र्णै त र्खि त = प्र ध्या ह
 आ नं र्ज जी वा ल मी क श ति म र्कु ह वा र्
 म ध्ये त र्खि ल्वा या ध र श पु स्त कं ध र ष्वा
 ता ध रं त र्खि तं म या यदि सु धो = प्र सु धो
 वा म म हो शे न दि ये ते शु नं ले गं गा यै न मः

पत्र
 ॥५॥

॥५॥

अथ स्थितो कस्मान्ति श्रितो गर्भविश्रान्ति रश्चाप
 विष्णुना जने। ईकल मापविमो जनहो रे स्थितिः ॥ १ ॥
 कर्त्तु प्रजापतिरुचिः गाम्त्री घृष्टः ब्रह्मा इव ता प्र
 मा श्लोप संसृष्टे ब्रह्म श्राप विभी चनार्थे जपे विनि
 ये गः जायत्री ब्रह्मे तुजासि अदुपं ब्रह्म विदुः स्तवं
 पस्थानि धिरा सु मने मावा ना ग्रहः ब्रह्म श्राप इवि
 मुक्ता भव पशु हि मारं गश तया श्रम लि गपं च मुखा
 जिधा ॥ एकमेव पदं ब्रह्म श्रु तस्य एव मम ध्रुवं ॥
 कर्त्तुर्न वां च लुप्त्यां ते न ह्ये ना हा या म्या ते ॥ १ ॥
 सूर्य मंडल संश्रुति वरुणा नय सं जने ॥ अथ पंक्ति
 जमये देवि श्रु त्रा शपाधि तु व्यती ॥ २ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॐ वशिष्ठश्चापानुग्रहमंत्र
 स्ववशिष्ठरूपिः परमत्मा इवता गायत्रीधरः
 वशिष्ठानुग्रहकर्तृ जपे विनिर्गोः ॐ सोम
 भं ज्योतिरर्कज्योतिरंशित्वात्पत्तज्योतिरंशु
 क्तं सर्वज्योतिरसोममौनलोडु रात्रमनात्पत्तवर्क
 महा रूपे दिवसि सिसरस्यति अजे दे अमरे हे विव्र
 त्ज्योति नमोस्तु लेगा यत्त्री प्रजवति वशिष्ठशा
 पात्वमुता नैव ज्योति मुजं प्रदर्शयत् अथ निष्वा
 मित्रश्चापविमो वनमंत्रस्य नुल नमिष्टकनी विष्वा
 मित्ररात्ररुचि गायत्रीधरः विष्णु देवता विष्वा
 त्रपसोपसप्त रथो जपे विनिर्गोः ॐ गायत्री नमो
 श्रीसुमुनि विष्वाजी मी यदुहे वां देवा म्बं व ज्योति